वर्ष 12, अंक 40, जनवरी -मार्च 2022

मूल्य
₹120/-

UGC Care Listed
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

नागफनी

भाग- 1

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No.UTTHIN/2010/34408

नागफनी

A Peer Reviewed Referred Journal

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Naagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष 12,अंक 40,जनवरी - मार्च 2022 भाग 1

संपादक
सपना सोनकर

सह-संपादक
रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. एन. पी. प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

अतिथि संपादक
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह

सलाहकार मंडल (Peer Review Committee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर किशोरी लाल रैगर, जोधपुर (राजस्थान)
प्रोफेसर आर.जयचंद्रन तिरूअनंतपुरम (केरल)
डॉ. एन. एस. परमार, बड़ोदा (गुजरात)
डॉ. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी. नगर (गुजरात)
प्रोफेसर विजय कुमार रोड़े, पुणे (महाराष्ट्र)
प्रोफेसर संजय एल. मादार, धारवाड (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोविन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. दादासाहेब सालुंके, औरंगाबाद(महाराष्ट्र)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ.उमाकांत हजारिका,शिवसागर (असम)

मुख पृष्ठ- डॉ.शेख आजम,मैत्री ग्राफिक्स,सावंगी (ह),औरंगाबाद

प्रकाशन/मद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ. एन. पी. प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा
नमन प्रकाशन 423/A अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू काटेज स्प्रिंग रोड, मसूरी-248179, उत्तराखण्ड दूरभाष: 0135-6457809 मो. 09410778718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी.आर-62 ए, ब्लाक कालोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म.प्र. 486886, मो. 097529964467

सहयोग राशि-150/- रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000, रुपये पंचवार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/- रुपये
पंचवार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए 3000/- रूपये, विदेशों में $50 आजीवन व्यक्ति 6000/- रुपये 10000/- रुपये

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक AC8367100138282 IFSC Code-IPOS0000001,Branch -SIDHI(NIRAT Prasad Prajapati)

नोट:- पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक - संचालक पूर्णतय: अवैतनिक एवं अध्यावसायिक है। **नागफनी'** में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वंय के हैं, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। **"नागफनी"** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीआर्ड बैंक/चेक/ बैंक ट्रांसफर /ई-पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/- अतिरिक्त जोड़ दें।

नागफनी

वर्ष-12 अंक 40, जनवरी-मार्च 2022 Volume-I

अनुक्रम — पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय 1

English

1. Serious About Fatness: A Critical Reading of Fay Weldon's *The Fat Woman's Joke*-Mr. Satyabrata Malik, Dr Bindu Singh 2-6
2. The Impact of Traditional Games on Enhancing Physical Fitness: An Analytical Study of North Eastern States' Athletes- Mohit Morya, Dharmander Kumar, Rishabh Singh, Dr. Kunal 7-15
3. Feminist Facets: Subverting Patriarchy in Girish Karnad's Naga-Mandala-Upakul Patowary,Dr. Jeuti Talukdar 16-19
4. Health and Nutrition Status of Scheduled Tribes Community-Neetu Punetha, Dr Lata Pandey 20-23
5. Traversing Existential Chaos and Absurdity: Navigating Manasi's Pragmatism vs. Indrajit's Rebellion in Badal Sircar's Absurdist Play Evam Indrajit-Harneet Kaur 24-27
6. A Study of Early Childhood Care and Education from the Parent's Perspective in the context of National educational policy, 2020-Shikha Kothari (Raturi), Dr. Tanuja Melkani 28-34
7. Harvesting Humanity: Organ Trade Dynamics and Its Detrimental Ramifications in Manjula Padmanabhan's Dystopian Play Harvest -Dr. Suruchi Sharma 35-38
8. Stress factors and its management among the working peoples-Dr Subash Chand 39-43
9. Retranslation: Text and Context—Towards a Pedagogy of Literary Translation-Dr Bindu Singh 44-48
10. Conception of Women Liberation in the Feminist Writings of Margaret Atwood-Dr. Vijay Singh Mehta 49-52
11. Shakuntala: A Paragon, Submissive, or the Woman Wronged- Shruti Pareek 53-55
12. The Paradox of Hybrid Inheritance in Derek Walcott's "A Far Cry from Africa"-Dr. Suresh Frederick 56-58
13. Environmental Consciousness among Primary School Teachers-Vinita Rani, Prof. B. R. Kukreti 59-72
14. The Politics of Alienation: Ethnic and National Identities in Rohinton Mistry's *Such a Long Journey*-Dr. Naveen Kumar Vishwakarma 73-76
15. The Magical Power of Language in Yoga: A Semantic Appraisal-Vijay Laxmi Rai 77-82
16. Monsters and Mothers: Maternal Sacrifice in Kashmiri Folktales -Adil Hussain, Dr Khursheed Ahmad Qazi 83-88
17. *Laburnum For My Head*: An Appraisal-Dr. Najmul Hasan 89-95
18. A Study of Relevance of Constructivist Approach for Teachers-Kamaljeet Kaur, Prof. VR Dhoundiyal 96-101
19. Material Evidence and its Operational Challenges in Criminal Trials in Indian Legal System-Dr. Sonam Y. Bhutia 102-108
20. A Study of Moral Ethics and Life Skills in Panchatantra-Dr. Rachana 109-112
21. Stylistics and Narratology: A Blended Approach to Selected Lyrics by William Blake-Pijush Bhadra 113-118
22. Chasing the Unattainable: Lacanian Desire & Real in Narayan's *The English Teacher* and *The Painter of Signs*-Dr Khursheed Ahmad Qazi 119-126
23. Informal Sector in India and the Policies-Dr. Ashok Kumar Maurya, Dr. Sunil Kumar Maurya 127-129
24. Gogamedi: Exploring Heroic Abode Of Divinely Goga In Medieval Rajasthan-Dr. Mayurakshi Kumar 130-132
25. Molestation and Maternal Missteps: Mala's Misery in Mahesh Dattani's Thirty Days in September-Dr. Kusum Kangar 133-136
26. Folktales as a source of Morality: A comparative study-Dr. Rohit Raj 137-142
27. Swami Vivekananda's Teachings, Philosophies and Missions-Dr. Mamta Rani 143-147

साहित्यिक विमर्श

1. साहित्य क्या है-ज्योति चव्हाण 148-149
2. रामानुजाचार्य सम्मत भक्ति में कर्म और ज्ञान की उपयोगिता -डॉ. महीप कुमार मीना 150-153
3. गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित संत कवि -डॉ.दीपिका वर्मा 154-156
4. समकालीन महिला नाटककारों के नाटको में अभिव्यक्त सांस्कृतिक चेतना -डॉ. राकेश डबरिया 157-159
5. लोक साहित्य और लोक परम्परा में लोकदेवता - डॉ. दिनेश बिवाल 160-162
6. संस्मरण कला की कसौटी पर देवेन्द्र सत्यार्थी कृत 'यादों के काफिले' - सुगन्धि गुप्ता 163-166
7. गया जिला 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का हिन्दी काव्य के विकास में योगदान-नचिकेता वत्स, प्रो. सुरेश चन्द्र 167-170
8. गोविंद मिश्र के कथा साहित्य में महानगरीय बोध- नीतीश कुमार 171-173
9. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् में शिवपूजन सहाय का अवदान-कुमारी सोनी 174-176
10. हिंदी सिनेमा पर महात्मा गाँधी के विचारों का प्रभाव -नीरज कुमार 177-181
11. वैदिक वाङमय में वर्णित गुरू-शिष्य सम्बन्ध की वर्तमान में उपादेयता- रेवती मेहता ,प्रोफेसर शालिनी शुक्ला 182-184

नागफनी
वर्ष-12 अंक 40, जनवरी - मार्च 2022 Volume-I

अनुक्रम पृष्ठ क्रमांक

12. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना एक व्यवसायिक प्रशिक्षण-डॉ.कोकिल 185-187
13. हरिशंकर परसाई के रचनाओं में व्यंग्य-डॉ.राजकुमार एस.नाईक 188-190
14. वर्तमान समय में हिन्दी भाषा का महत्त्व-डॉ.शिखा रानी 191-194
15. भारतीय ज्ञान-परम्परा के सतत प्रवाह की संवाहिका कृति 'श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण' : एक अमूल्य वैश्विक धरोहर-डॉ. राजीव रंजन,डॉ. अवधेश प्रताप सिंह 195-200
16. रेडियो नाटक की रचनाधर्मिता का शिल्पगत वैशिष्ट्य-सोहन कुमार 201-204
17. हिंदी के विद्यार्थी बनाम 'सेल्समैन'-मनोजकुमार शर्मा (अवशेष) 205-205
18. भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता-डॉ शालिनी मिगलानी 206-208
19. वंदना टेटे के काव्य में आदिवासी जीवन का यथार्थ -ज्ञान्ती , प्रोफेसर सुरेश चन्द्र 209-212
20. औपनिवेशिक भाषा विमर्श और भारतेन्दु हरिश्चंद्र का भाषा चिंतन-सर्वेश कुमार 213-215
21. प्रसाद की कहानियों में संदेश-मनोजकुमार सुभाष शर्मा 216-219
22. बनारस की लोक-सांस्कृतिक विरासत: नाग-नथैया लोक-नाट्य-सहायक प्राध्यापक प्रियंका राजेन्द्रप्रसाद चौहान 220-223
23. औपनिवेशिक काल में प्रतिबंधित हिंदुस्तानी साहित्य में सोज़े-वतन-दिवेश कुमार चंद्रा 224-226
24. माखनलाल चतुर्वेदी के कहानियों में राष्ट्रीय चेतना-डॉ.राजकुमार एस.नाईक 227-228
25. आधुनिकता के संदर्भ में राम- मनु पाण्डेय 229-231
26. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आँचलिकता-डॉ- अनिरुद्ध कुमार 232-234

स्त्री विमर्श

1. मेघ सिंह 'बादल' के उपन्यासों में नारी की स्थिति -सोनाली राजपूत ,प्रोफेसर सुरेश चन्द्र 235-238
2. 'जया जादवानी' की कहानियों में स्त्री चेतना का स्वर-सुमन कुमारी 239-247
3. भारतीय हिंदी सिनेमा में स्त्री बदलता का स्वरूप - राकेश कुमार त्रिपाठी 248-251

आदिवासी विमर्श

1 'राष्ट्रपति का दत्तक' कहानी में आदिवासी दृष्टि-पवन कुमार 252-255

अन्य विमर्श

1. उपयोगकर्ताओं को सूचना सेवाएँ प्रदान करने में विशिष्ट कृषि पुस्तकालय की प्रभावशीलता का विश्लेषणात्मक अध्ययन-राम प्रसाद कुर्रे, डॉ.कल्पना चंद्राकार 256-264
2. कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान कवि कुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय में पुस्तकालय सूचना संसाधनों और सेवाओं के साथ उपयोगकर्ता संतुष्टि की खोज : एक व्यावसायिक परीक्षा -हर्षा एम.पाटील, डॉ.कल्पना चंद्राकर 265-277
3. व्यावसायिक संरचना का अध्ययन जनपद उधम सिंह नगर के विशेष संदर्भ में -रेखा देवी ,डा. पूनम शाह गंगोला 278-280
4. स्थानीय स्वशासन में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका(जनपद पिथौरागढ़ के विकास खंड डीडीहाट के विशेष संदर्भ में)-रेनू भंडारी (शोधार्थी) 281-286
5. अधिक समावेशी समाज की ओर : जगदगुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय में दिव्यांग सशक्तिकरण के लिए पुस्तकालय सेवाओं का महत्व - श्रीमती रेनू कपूर 287-297
6. सार्वजनिक पुस्तकालय: सामाजिक परिवर्तन और विकास के उत्प्रेरक- तृप्ति ताम्रकर , डॉ. कल्पना चंद्राकार 298-303
7. पर्यावरण चेतना के विकास में 'पर्यावरण डाइजेस्ट' पत्रिका का योगदान –रूचि कुमारी,प्रोफेसर सुरेश चन्द्र 304-306
8. शिक्षा के नए आयाम: भारतीय भाषा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020-रौशन सिंह 307-309
9. राष्ट्र एवं समाज के निर्माण में संस्कृत की भूमिका-डॉ.सुनिता मीना 310-312
10. भारतीय और पाश्चात्य दर्शन के सन्दर्भ में कारण और कार्य के मध्य 'सम्बन्ध' का दार्शनिक विश्लेषण-डॉ. दीपक कुमार गुप्ता 313-315
11. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन : डॉ.भीमराव अम्बेडकर की भूमिका –भवेता सिंह 316-318
12. प्राथमिक स्तर पर अधिगम परिणामों के विकास का विश्लेषणात्मक अध्यन –मोर पाल सिंह , प्रो. रूचि हरीश आर्या 319-325
13. यौगिक अभ्यासों का महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन- श्वेता कुर्रे, डॉ- सुनील कुमार मिश्र 326-330
14. औपनिवेशवाद के दौरान नगरीकरण का प्रारूप नगर अल्मोडा-हेम चन्द्र आर्या ,डॉ महिराज मेहरा 331-333

संपादकीय .....

जन्म से लेकर मृत्यु तक के संबंधित सारे कार्यक्रम पंडितों, पुरोहितों द्वारा कराए जाते हैं। यह एक हिंदू प्रथा बन गई है। यह एक ऐसी अभेद परंपरा बन गई है किसको तोड़ना बड़ा मुश्किल है। शादी ब्याह बिना पंडित के मंत्रोच्चारण के पूरे नहीं होते हैं। यह एक ऐसा अंध विश्वास है जो हिंदू समाज में फैला हुआ है। कुछ ज्ञानवान लोग जिनको बुद्धिजीवी कहा जाता है वे जीवन भर इनका विरोध करते है। लेकिन अंत में उन्ही धार्मिक कर्मकांडों में फंस जाते हैं। लव मैरिज और लिविंग इन रिलेशनशिप का दौर चला है युवा उन अंधविश्वास से भरी सामाजिक रीति रिवाजों, कुप्रथाओं और रूढ़ीवादी परंपराओं को ठुकराने लगे हैं। उनके अंदर विज्ञान से भरी सोच उफान ले रही है। वे लोग कुछ नया करके इतिहास बनाना चाहते हैं।

आज का युवा रूढ़िवादी, पुरातन और अवैज्ञानिक सोच से बाहर निकल रहा है। वह नवीनतम और विज्ञान से ओतप्रोत विचारों को अपना रहा है। वह एकदम नवीन समाज का निर्माण कर रहा है। उनके इन विचारों से पुरानी पीढ़ी आहत हो सकती है। अब युवाओं ने शादी रचाने की एक नवीन परंपरा डाली है। वे लोग पंडित द्वारा पोथी पत्रा पढ़वा कर शादी नही रचा रहे हैं। वे लोग डॉक्टर अंबेडकर द्वारा रचित संविधान की समानता, मौलिक अधिकारों की धाराएं और प्रिएंबल का पाठ करा कर शादी कर रहे हैं। यह एक क्रांतिकारी समाज को बदलने वाला कदम है।

मैंने अपने उपन्यास सूअरदान में ब्राह्मण लड़कियों की शादियां, दलित और पिछड़े वर्ग के युवाओं से उपरोक्त तरीके से कराई हैं। मेरे उपन्यास का असर यह हुआ कि लखनऊ वि वि के पिछड़ी जाति के युवाओं और युवतियों ने डॉक्टर अंबेडकर के संविधान की समानता, मौलिक अधिकारों की धाराएं और प्रिएंबल का पाठ करके शादी संपन्न कराई। पुरोहित की भूमिका लखनऊ वि वि के प्रोफेसर श्री कालीचरण स्नेही ने निभाई। यह मेरे और दलित व पिछड़े समाज के लिए गर्व का विषय हो सकता है। सूअरदान उपन्यास में वर्णित शादी प्रकरण का तेजी से पालन किया जा रहा है।

रुपनारायण सोनकर.....!

अन्य

उपयोगकर्ताओं को सूचना सेवाएँ प्रदान करने में विशष्टि कृषि पुस्तकालय की प्रभावशीलता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

-राम प्रसाद कुर्रे,
शोधार्थी
ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान विभाग,
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर , छत्तीसगढ

-डॉ.कल्पना चंद्राकार,
शोध निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष,
ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर , छत्तीसगढ,

सारांश

यह शोध–पत्र इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा प्रदान की गई सेवाओं पर किए गए अध्ययन का परिणाम है। यह कार्य पुस्तकालय की सेवाओं और संकायों द्वारा उन सेवाओं के उपयोग पर केंद्रित है और आईजीकेवी के छात्र संग्रह और सेवाओं की उपलब्धता और उपयोग के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया है, कि पुस्तकालय में पुस्तकों, पत्रिकाओं (राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों) का एक समृद्ध संग्रह है। सी डी रोम में सीएबीआई, एग्रीकोला, एजीआरआईएस जैसे डेटाबेस, विज्ञान प्रत्यक्ष जैसे विभिन्न डेटाबेस तक पहुंच, कृषि में ई–संसाधनों के लिए कंसोरटियम (सीईआरए) डॉक्टरेट थीसिस रिपोजिटरी कृषिप्रभा। पुस्तकालय में प्रकाशनों का एक अलग विभाग है जो डिजिटलीकरण की परियोजनाएं चलाता है, कृषि से संबंधित कई साहित्य प्रकाशित करता है । यह पुस्तकालय सोल एवं लीबसीस जैसे सॉफ्टवेयर का उपयोग करके पूरी तरह से स्वचालित है तथा अपने उपयोगकर्ताओं को संतुष्ट करने में और ऊंचाइयों को प्राप्त करने की इसकी उच्च दृष्टि है।

मुख्य सांकेतिक कुंजी शब्दः सूचना सेवा, कृषि सूचना सेवा, सूचना स्रोत आधारित सेवाएँ, पुस्तकालय सेवा

परिचय

पंडित जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदे''ा से अलग होकर इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ की स्थापना राज्य की अधिनियम के अंतर्गत 20 जनवरी 1987 को अस्तित्व में आया। इस वि''वविद्यालय का नामकरण तत्कालिन प्रधानमंत्री स्व. श्रीमति इंदिरा गांधी के नाम पर किया गया। जिसका मुख्य उद्दे''य कृषि एवं संबंधित विज्ञानों के क्षेत्र में शिक्षा की व्यवस्था करना और शोध कार्यो में वि''ोष तौर पर कृषि तथा संबंधित विज्ञानों में विकास करना है, इस हेतु निरन्तर कार्यक्रमों तथा सूचना और तकनीक के स्थानान्तरण कार्य के द्व ारा ऐसे उद्दे''यों की पूर्ति करना जिनका लक्ष्य ग्रामीण व्यक्तियों के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर को सुधारना है।

छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण के प''चात् पुष्प के उत्पादन के विकास पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है और ऐसी उपज ली जा रही जो क्षेत्र के तापमान और वातावरण के अनुरुप उपजायी जा सके।

नेहरू पुस्तकालय, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय का केंद्रीय पुस्तकालय है। इसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा मध्य भारत के क्षेत्रीय पुस्तकालय के रूप में मान्यता दी गई है। इसका उद्दे''य विश्वविद्यालय के संकायों और छात्रों की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करना है, साथ ही विश्वविद्यालय के संबद्ध संस्थानों की जरूरतों को पूरा करना है। जिन संस्थानों को नेहरू पुस्तकालय द्वारा सेवा प्रदान करने की आवश्यकता है, उनका उल्लेख नीचे किया गया है–

एस.ए.कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी, रायपुर

कृषि अभियांत्रिकी संकाय, रायपुर

पशुपालन महाविद्यालय, अंजोरा, दुर्ग

टीसीबी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर ऑफ रिसर्च स्टेशन, बिलासपुर

एसजी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर ऑफ रिसर्च स्टेशन, जगदलपुर

आरएमडी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, अंबिकापुर

एसके कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर ऑफ रिसर्च स्टेशन, कबीरधाम

कॉलेज ऑफ फेशरीज, कबीरधाम

बीआरएसएम कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, मुंगेली, बिलासपुर

उद्यानिकी महाविद्यालय, राजनांदगांव

डाटा विश्लेषण

प्रस्तुत शोध–पत्र में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) के केंद्रीय पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं में से विद्यार्थी तथा शिक्षकों से प्रश्नावली के माध्यम से प्राथमिक आंकड़े एकत्रित किये गये हैं। केंद्रीय पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं को कुल 120 प्रश्नावली वितरित की गई जिसमें से विद्यार्थीयों से 76 प्रश्नावली प्राप्त हुई तथा शिक्षकों से 08 प्रश्नावली प्राप्त हुई। इस प्रकार इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) में निदर्शन के आधार पर कुल 120 प्रश्नावली वितरित की गई थी, जिसमें से 84 प्रश्नावली, 70 प्रतिशत प्राप्त हुई, प्राप्त प्रश्नावली से प्राथमिक आंकड़ों का एकत्रितकरण, संग्रहण, व्यवस्थापन एवं विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथा तालिका द्वारा किया गया है।

श्रेणी :– पुस्तकालय में वितरित किये गये प्रश्नावली में से प्राप्त प्रश्नावली के आधार पर सर्वेक्षण में भाग लेने वाले विद्यार्थी तथा शिक्षकों की श्रेणी को तालिका क्रमांक 1 में देखा जा सकता है–

तालिका क्रमांक 1: सर्वेक्षण में भाग लेने वाले

सरल क्रम. ांक	श्रेणियाँ		योग	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
1	विद्यार्थी	स्नातक	62	73.8	76	90.47
		स्नातकोत्तर	8	9.52		
		अनुसंधान विद्वान	6	7.14		
2	शिक्षक	व्याख्याता	3	3.57	8	9.52
		प्राध्यापक	2	2.38		
		वरिष्ठ प्राध्यापक	3	3.57		
योग			**84**	**100**	**84**	**100**

उपरोक्त सांख्यिकीय तालिका क्रमांक 1 के अनुसार, सर्वेक्षण में भाग लेने वाले विद्यार्थीयों कुल संख्या 76 (90,47 प्रतिशत) है, और शिक्षकों की कुल संख्या 8 (9.52 प्रतिशत) है।

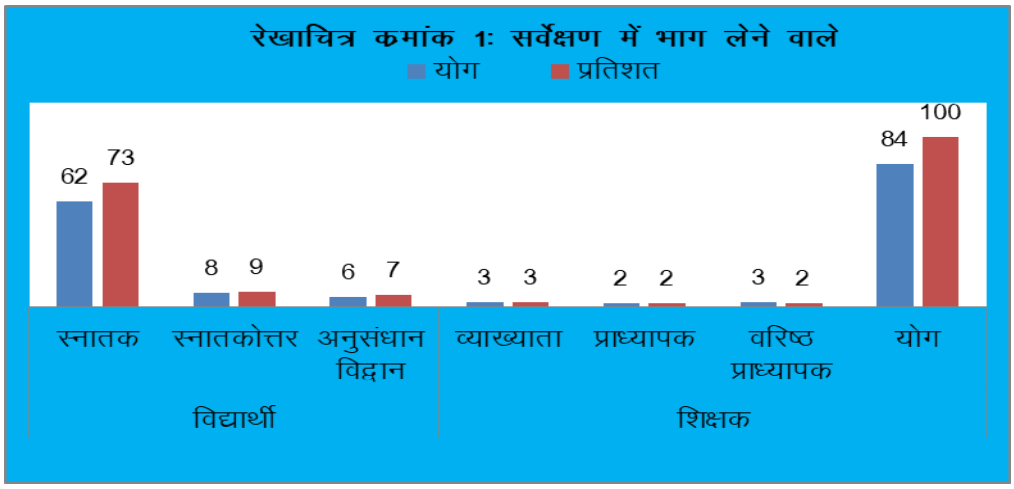

सूचना सेवाओं का उपयोग:–पुस्तकालय में वितरित किये गये प्रश्नावली में से प्राप्त प्रश्नावली के आधार पर उपयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न सूचना सेवाओं को तालिका कमांक 2 में देखा जा सकता है–

तालिका कमांक 2: पुस्तकालय सूचना सेवाएँ

सरल कम.ांक	सूचना सेवाएँ	विद्यार्थी		शिक्षक		योग	प्रतिशात
		उपयोगकर्ता	प्रतिशत	उपयोगकर्ता	प्रतिशत		
1	संदर्भ सेवा	16	9.69	6	11.53	22	10.28
2	दस्तावेजीकरण सेवा	12	7.40	4	7.69	16	7.47
3	ग्रंथ सूची सेवा	20	12.34	8	15.38	28	13.08
4	अनुक्रमणिका सेवा	4	2.46	5	9.61	9	4.20
5	सारकरण सेवा	3	8.85	5	9.61	8	3.73
6	इंटर लाइब्रेरी लोन सेवा	25	15.43	4	7.69	29	13.55
7	अनुवाद सेवा	3	1.85	1	1.92	3	1.40
8	फोटोकॉपी सेवा	39	24.07	6	11.53	45	21.02
9	वर्तमान जागरूकता सेवा	2	1.23	1	1.92	3	1.40
10	समाचार पत्र कतरन सेवा	13	8.02	2	3.84	15	7.00
11	रेफरल सेवा	4	2.46	1	1.92	5	2.33
12	कृषि विस्तार सेवा	15	9.25	6	11.53	21	9.81
13	माइक्रोफिल्म सेवा	2	1.23	0	0.00	2	0.93
14	सूचना सेवा का चयनात्मक प्रसार	4	2.46	2	3.84	6	2.80
15	अन्य	0	0.00	1	1.92	1	0.46
योग		**162**	**100**	**52**	**100**	**214**	**100**

उपरोक्त सांख्यिकीय तालिका क्रमांक 2 के अनुसार, उपयोगकर्ताओं के द्वारा फोटोकॉपी सेवा पुस्तकालय में सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली सेवा है, अर्थात, 39 (24.07 प्रतिशत), और माइक्रोफिल्म सेवा छात्रों के बीच सबसे कम उपयोग की जाने वाली सेवा है। सबसे कम उपयोग के पीछे का कारण इस सेवा के बारे में उपयोगकर्ताओं के बीच जागरूकता की कमी है। संकाय ग्रंथसूची सेवा का सबसे अधिक उपयोग करते हैं और अनुवाद सेवा और रेफरल सेवा का सबसे कम उपयोग करते हैं।

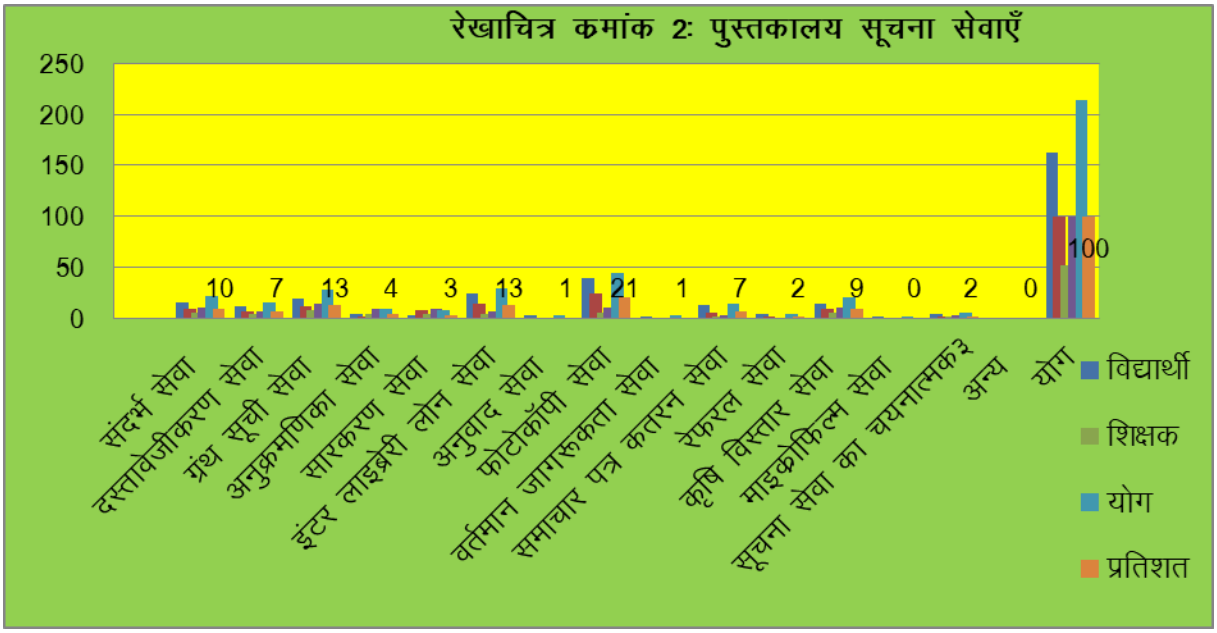

पुस्तकालय सूचना सेवा से उद्देश्य :– पुस्तकालय में वितरित किये गये प्रश्नावली में से प्राप्त प्रश्नावली के आधार पर विद्यार्थी तथा शिक्षकों के पुस्तकालय सूचना सेवा को तालिका क्रमांक 3 में देखा जा सकता है :–

तालिका क्रमांक 3: पुस्तकालय सूचना सेवा से उद्देश्य

सरल क्रम.	उद्देश्य	विद्यार्थी		शिक्षक		योग	प्रतिशत
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
1	परीक्षा में सफलता	24	17.91	1	5.26	25	16.33
2	व्यक्तित्व में विकास	45	33.58	8	42.10	53	34.64
3	ज्ञान का विस्तार	63	47.01	8	42.10	71	46.40
4	अन्य	2	1.49	2	10.52	4	2.61
योग		**134**	**100**	**19**	**100**	**153**	**100**

उपरोक्त प्रस्तुत सांख्यिकीय तालिका क्रमांक 3 के अनुसार, पुस्तकालय सूचना सेवा में विद्यार्थी का सबसे अधिक उद्दे''य ज्ञान का विस्तार 63 (47.01 प्रति''ात) है तथा सबसे कम अन्य 02 (1.49 प्रति''ात) उद्दे''य है शिक्षक का अधिक उद्दे''य व्यक्तित्व का विकास, ज्ञान का विस्तार 04 (42.10 प्रति''ात) है। तथा सबसे कम उद्दे''य परीक्षा में

सफलता 01 (5.26 प्रतिशत) है।

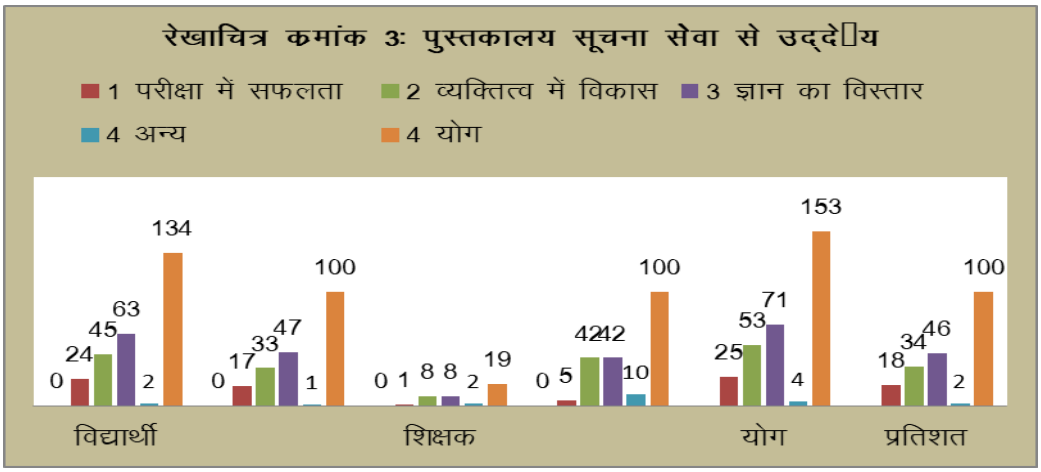

सूचना सेवा से संतुश्ट :– पुस्तकालय में वितरित किये गये प्रश्नावली में से प्राप्त प्रश्नावली के आधार पर विद्यार्थी तथा शिक्षकों के सूचना सेवा से संतुष्टि को तालिका कमांक 4 में देखा जा सकता है :–

तालिका कमांक 4: सूचना सेवा से संतुष्ट

सरल कम	संतुष्ट	विद्यार्थी		शिक्षक		योग	प्रतिशात
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
1	हां	46	69.69	8	100	54	72.97
2	नहीं	20	30.30	0	0	20	27.02
योग		**66**	**100**	**8**	**100**	**74**	**100**

उपरोक्त प्रस्तुत सांख्यिकीय तालिका कमांक 4 के अनुसार, सूचना सेवा से कुल संतुष्ट 74 विद्यार्थी समुह में योग 66 है जिसमें अधिक हां 46 (69.69 प्रतिशत) है तथा कम नहीं 20 (30.30 प्रतिशत) है शिक्षक समुह में कुल योग 08 है जिसमें अधिक हां 08 (100 प्रति''ात) है तथा नहीं 00 (00 प्रतिशत) है।

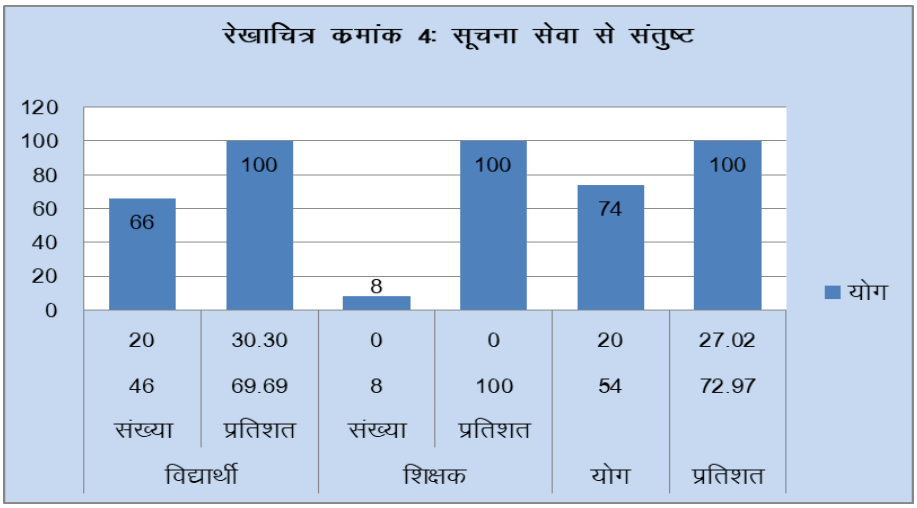

सूचना सेवा की आशा/अपेक्षा :– पुस्तकालय में वितरित किये गये प्रश्नावली में से प्राप्त प्रश्नावली के आधार पर विद्यार्थी तथा शिक्षकों के सूचना सेवा की कुल आशा/अपेक्षा को तालिका कमांक 5 में देखा जा सकता है :–

तालिका कमांक 5: सूचना सेवा की आशा/अपेक्षा

सरल कमांक	आशा/अपेक्षा	विद्यार्थी		शिक्षक		योग	प्रतिशत
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत		
1	ई–संसाधन	36	36	5	33.33	41	35.65
2	श्रव्य दृश्य सामग्री (सी डी/डी वी डी)	32	32	3	20	35	30.43
3	विडियो कॉन्फ्रेंसिंग	31	31	6	4	37	32.17
4	अन्य	1	1	1	6.66	2	1.73
योग		**100**	**100**	**15**	**100**	**115**	**100**

उपरोक्त प्रस्तुत सांख्यिकीय तालिका कमांक 5 के अनुसार, सूचना सेवा से आशा/अपेक्षा विद्यार्थी में सबसे अधिक ई–संसाधन 36 (36 प्रतिशत) है तथा सबसे कम अन्य 01 (01 प्रति"ात) है, शिक्षक में सबसे अधिक विडियो कॉन्फ्रेंसिंग 0.6 (40 प्रतिशत) है तथा सबसे कम अन्य 01 (6.66 प्रति"ात) है।

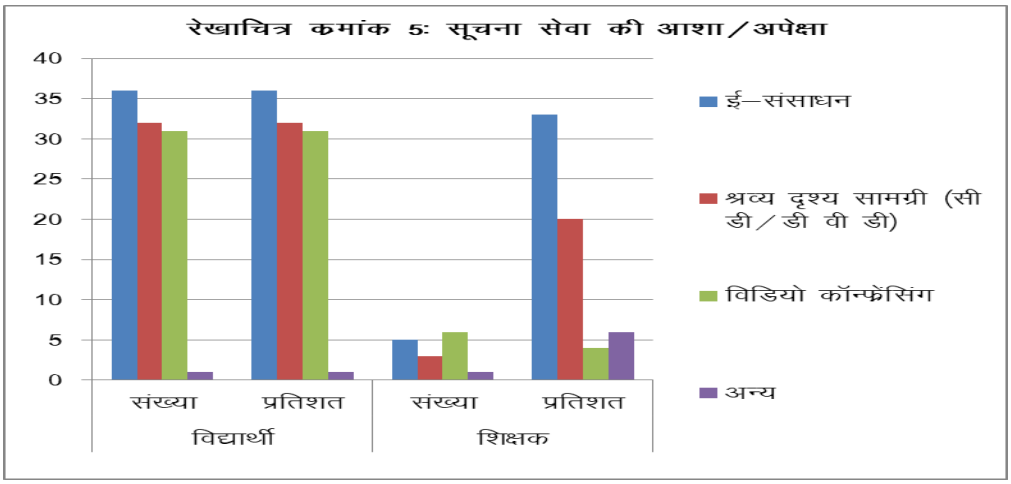

निष्कर्ष :—

अपने इस सर्वेक्षण में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़) के केंद्रीय पुस्तकालय में वितरित किये गये प्रश्नावली में से प्राप्त प्रश्नावली के माध्यम से डाटा एकत्रित किया गया है। जिससे नेहरू, पुस्तकालय की व्यवस्था समस्या तथा आव''यकताओं को बारीकी से समझा है व निष्कर्ष निकाला है।

छत्तीसगढ़ राज्य के कृषि विकास में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के नेहरू पुस्तकालय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहां न केवल कृषि से संबंधित विभिन्न पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों, प्राध्यापकों, शोध वैज्ञा. निकों एवं कृषक समाज से जुड़े संबंधित व्यक्तियों की आव''यकतानुसार उन्हें कृषि साहित्य एवं सूचनाओं को उपलब्ध कराया जा रहा है, बल्कि विश्व स्तर के कृषि साहित्य को संरक्षित एवं व्यवस्थित कर नवीनतम् सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध किया जा रहा है, जिसका ना केवल छत्तीसगढ़ में ही नहीं, अपितु समस्त मध्य भारत के छात्र—छात्राओं, शोधार्थियों, प्राध्यापकों, कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं द्वारा उपयोग किया जा रहा है। यहां उपलब्ध आलेखों, पाठ्य—सामग्री, इलेक्ट्रानिक स्वरूप में करने एवं डाटा एन्ट्री कर आव''यक हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर के माध्यम से, कम से कम समय में अधिक से अधिक सूचना को शीघ्रतापूर्वक उपयोगकर्ताओं को प्रदान किया जा रहा है।

अंचल के कृषि उपयोगकर्ताओं के विचारों के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि आव''यकताओं को ध्यान में रखकर पुस्तकालय एवं सूचना सेवाएं प्रदान की जाये तो न केवल पुस्तकालय का सूचना तंत्र और अधिक विकसित होगा वरन् कृषि, अनुसंधान एवं प्रसार में लगे प्राध्यापक, वैज्ञानिक एवं अन्य संबंधित व्यक्तियों के समय तथा ऊर्जा का श्रेष्ठ उपयोग के साथ—साथ यहां उपयोगकर्ताओं को उनके विषय से संबंधित नवीनतम् जानकारी मिलने का भी सुअवसर प्राप्त होगा। जिससे कृषि विकास के सतत् अनुसंधान में लगे वैज्ञानिकों, प्रसारकों एवं उपयोगकर्ताओं के समय एवं ऊर्जा का श्रेष्ठ उपयोग होगा जिससे कृषि में नित्य नये शोध परिणामों के माध्यम से मात्र इसी का नहीं अपितु विश्व कृषि परिदृश्य में सकारात्मक परिवर्तन संभव होगा।

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहां आज भी ग्रामीण अंचल में आजीविका का मुख्य आधार कृषि है इस जीवनोपयोगी व्यवसाय के लिए आव''यक है कि कृषि आधारित नवीनत्म तकनीकी ज्ञान जो कि संभव है कृषि ज्ञान के सागर नेहरू पुस्तकालय से जहां पर कृषि से संबंधित ज्ञान को संग्रहित, संरक्षित कर उनका उपयोग अध्ययन एवं

प्रसार– प्रचार में किया जा रहा है।

देश में इंदिरा गांधी कृषि विशविद्यालय रायपुर के नेहरू पुस्तकालय को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है, जो न केवल छत्तीसगढ़ वर्न सम्पूर्ण मध्य भारत के उपयोगकर्ताओं को कृषि ज्ञान का पोषण करता है, जहां न केवल कृषि साहित्य भौतिक स्वरूप में उपलब्ध है वर्न सम्पूर्ण विश्व की कृषि आधारित जानकारी इलेक्ट्रानिक स्वरूप में भी उपलब्ध है तथा नवीनत्म तकनीकी इंफारमेशन लैन, सी. डी. रोम डाटाबेस एवं आनलाईन पब्लिक एक्सेस केटलॉग आदि के माध्यम से उपलब्ध कराई जा रही है।

यहां प्रमुख सेवाओं में सूचना एवं प्रलेखन सेवा, कम्प्यूटर सार सेवा, सूचना पुनः प्राप्ति सेवा, प्रशिक्षण सेवा, स्नातकोत्तर स्तरीय पाठ्यक्रय–जैविक साहित्य एवं ग्रंथ सूची सेवा, नवागन्तुक प्रदर्शन सेवा और पुस्तक आदान–प्रदान सेवा प्रमुख है।

नेहरू पुस्तकालय के प्रलेखन केन्द्र में 1992 से सम्पूर्ण विश्व के एग्रीकल्चरल डाटाबेस का संग्रह है जिसमें कैब, एग्रीस, एग्रीकोला प्रमुख है जहां से लाखों की संख्या में सन्दर्भ सार सहित उपयोग किये जा सकते हैं। जो कि विश्वविद्यालय परिसर के एरिया नेटवर्क पर भी उपलब्ध है। पत्र पत्रिका विभाग में 200 से अधिक देशी, विदेशी पत्र पत्रिकाओं को भी नियमित रूप से भौतिक एवं ऑनलाइन दोनों स्वरूप में मंगाया जा रहा है इसके बैक वाल्यूम भी उपलब्ध है यहां पर कृषि विश्वविद्यालय के प्रकाशन, वार्षिक प्रतिवेदन भी उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त यहां पर पाठ्य पुस्तक विभाग में लगभग 40 हजार पाठ्य सामग्री का संग्रह है जो के अत्यधिक उपयोगी है।

प्रदेश के इस महत्वपूर्ण पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र नेहरू पुस्तकालय के निरन्तर विकास और दोहन करने की आव''यकता है जिसका समुचित उपयोग कर कृषि शिक्षा एवं शोध परिणामों के माध्यम से प्राप्त नवीनतम् तकनीकी ज्ञान का संचार कृषकों एवं कृषि से सम्बंधित व्यक्तियों में एक नई क्रांति का सूत्रपात किया जा सकता है जिसमें न केवल छत्तीसगढ़ के कृषकों के जीवन स्तर को उन्नत किया जा सकता है, अपितु कृषि आधारित रोजगार में वृद्धि भी की जा सकती है, जिससे यहां के कृषकों के समक्ष उत्पन्न होने वाली पलायन की समस्या का समाधान भी किया जा सकता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) के नेहरू पुस्तकालय के उचित विकास के लिए कृषि सूचना सेवा में आव''यकतानुसार सूचना सेवा में विशिष्ट आधुनिकीकृत सेवा में आवश्यक परिवर्तन करना विचारणीय है, जिससे उपयोगकर्ताओं की आवश्यकतानुसार कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान उपलब्ध हो सके तथा देश की प्रगति के लिए कृषि शिक्षा का विस्तार करना आवश्यक है ।

अतः वित्तीय एवं मानवीय संसाधन के विकास के लिए तकनीकी सूचना का विकास करना आवश्यक है।

सुझाव :–

प्रशिक्षित कर्मचारियों की नियुक्ति करना चाहिए।

पाठ्य सामग्री अद्यतन उपलब्ध किया जाना चाहिए।

पुस्तकालय समय सीमा में वृद्धि किया जाना चाहिए।

कम्प्यूटर एवं इंटरनेट तथा वाईफाई की सुविधा में वृद्धि करनी चाहिए।

सर्कुलेशन काउंटर का विस्तार करना चाहिए।

फोटोकापी सेवा का विस्तार किया जाना चाहिए।

पुस्तकालय संग्रहण में वृद्धि की किया जाना चाहिए।

पुस्तकालय संग्रह उच्च गुणवत्ता युक्त एवं पाठ्यक्रम पर आधारित होनी चाहिए।

उपयोगकर्ताओं को समय पर प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

अध्ययन कक्ष का विस्तार किया जाना चाहिए।

पुस्तक सर्कुलेशन की संख्या में वृद्धि करनी चाहिए।

उपरोक्त अध्ययन से पता चलता है कि इंदिरा गांध ाी कृषि विश्वविद्यालय का पुस्तकालय अपने उपयोगकर्ताओं की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने में काफी हद तक सफल है। पुस्तकालय में इलेक्ट्रॉनिक संदर्भ स्रोतों का बहुत अच्छा संग्रह है, जिसका अर्थ है कि यह अपने उपयोगकर्ताओं को सबसे अद्यतन जानकारी प्रदान करने में सक्षम है। यद्यपि यह पाया गया है कि पुस्तकालय कंप्यूटर–आधारित और इंटरनेट–आधारित इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों से अच्छी तरह सुसज्जित है।

एक अच्छी तरह से संरचित उपयोगकर्ता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए, और प्रत्येक नए उपयोगकर्ता को पुस्तकालय का अवलोकन दिया जाना चाहिए ताकि पुस्तकालय के संसाधन का उचित उपयोग हो सके, जिससे पुस्तकालय के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.हसन एन. (2012)। राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली के अंतर्गत वेब आधारित कृषि सूचना प्रणाली एवं सेवा. डेसीडॉक जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, 32(1), 24–30.

2.कपिल,एच.के. (2010)। अनुसंधान विधियां. आगरा : एच.पी. भार्गव बुब हाऊस. पृ.सं.147–149,160,218, 282–283.

3.पटेल, ओम प्रकाश एवं सेनगुप्ता, सूपर्ण. (2010)। सम्पूर्ण. छत्तीसगढ़ में पुस्तकालय नेटवर्कों द्वारा सूचना संसाधनों की साझेदारी, ग्रंथालय विज्ञान पत्रिका, खण्ड 41. पृ. सं. 88–95.

4.नेहरू पुस्कालय, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुरः युगबोध डिजिटल प्रिन्टस, 2007.

5.सूद, सिंह, दिनेश. (2002)। ग्रंथालय विज्ञान की रूपरेखा. पटनाः नोवेल्टी एण्ड कम्पनी. पृ.सं. 262–265.

6.पवन, उषा एवं गुप्ता, पी.के. (1994)। सुचना तकनीकें एवं ग्रंथालयः ग्रंथालय विज्ञान पत्रिका, भाग 25, अंक 1,2 जनवरी–जून. पृ. सं. 110–111.

7.त्रिपाठी, एस.एम. (1993)। संदर्भ एवं सूचना सेवा के नवीन आयाम, आगरा : वाई. के. पब्लि''ार्स. पृ. सं. 6–6, 77–78, 106–125.

8.पाण्डे, माधव एवं सेंगर, आर.बी.एस. छत्तीसगढ़ के कृषि विकास में महिला सशक्तिकरण. नेहरू पुस्तकालय, इंदिरागांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर छ.ग.

9ण्पुस्तकालय सेवा, नेहरू पुस्तकालय, इंदिरा गांधी कृषि वि''वविद्यालय, रायपुर.

10.www.igau.edu.in

****